## विनीता वूड

# परिवार के साथ-साथ जीता कला का मोर्चा

कुमुद मोहन

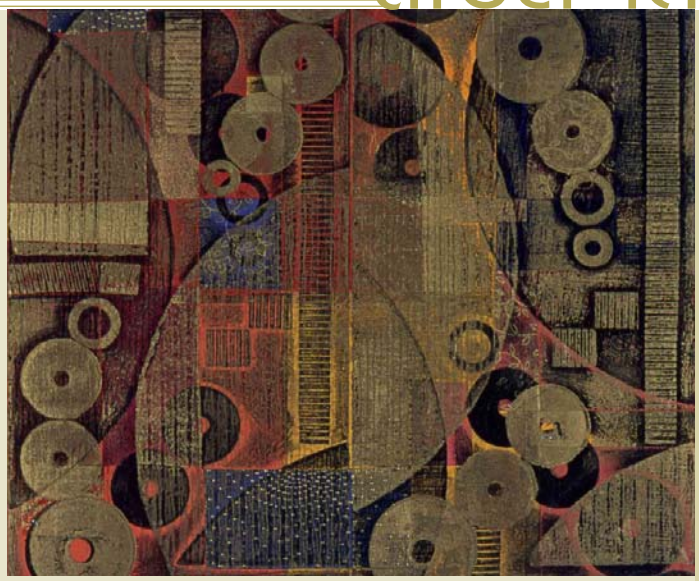

फोटो : साभार कुमुद मोहन

कैलिफ़ोर्निया में 1982 में लगुना बीच आर्ट्स फ़ेस्टिवल का दृश्य: आश्चर्यजनक नज़ारा। हज़ारों लोग। दूरदराज और निकट की चुनिंदा कलाकृतियों पर नज़र दौड़ाते हुए- कुछ कला नमूनों को चुनते हुए, कुछ को अस्वीकार करते हुए, और इन्हें फिर से देखने के लिए कई बार चक्कर लगाते हुए। छह महीने पहले ही विवाह बंधन में बंधी विनीता वूड अपनी कला पारखी सास के साथ समुद्रतट पर आयोजित इस विख्यात कला मेले में आई थीं और इस गहमागहमी को देखकर चकित थीं।

वह कहती हैं, ''मैंने सपने में भी नहीं सोचा था कि किसी दिन मैं भी उन कलाकारों में शामिल होऊंगी जिनकी कला को इस कला मेले में निहारने और बिक्री के लिए प्रदर्शित किया जाएगा।'' सच तो यह है कि 49 वर्षीय विनीता उन गिनेचुने कलाकारों में से हैं जिन्हें लगातार छह बार लगुना बीच आर्ट्स फेस्टिवल में अपनी कला को प्रदर्शित करने के लिए आमंत्रित किया गया है। वह अब अमेरिकी नागरिकता ले चुकी हैं और इस साल गर्मियों में भी अपनी कला के नमूने यहां प्रदर्शित करेंगी।

''सच पूछिए तो 70 के दशक के आखिरी सालों में दिल्ली कॉलेज ऑफ़ आर्ट में ललितकला में स्नातक की पढ़ाई करते हुए मैं जब दूसरे छात्रों को प्रिंटमेकिंग में काम करते देखती तो मेरा भी मन होता कि मैं भी प्रिंटमेकिंग सीखूं।'' विनीता प्रिंटमेकिंग के अपने शौक के बारे में बताती हैं, ''दिसंबर 1981 में मेरी शादी हुई। मुझे पता चला कि यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया, इर्विन में प्रिंटमेकिंग सिखाई जाती है जो हंटिंग्टन तट के बहुत पास है जहां मेरे पति मार्टेन वूड फ़ाइबर ग्लास की छोटी नावें बनाते थे। बस, मुझे अपना सपना पूरा करने का मौका मिल गया। हां, उस समय मुझे बिल्कुल नहीं मालूम था कि मुझे अमेरिका के प्रिंटमेकिंग के सबसे प्रसिद्ध अध्यापक जॉन पॉल जोन्स से सीखने का सौभाग्य प्राप्त होगा।''

वर्ष 1993 में विनीता सैडलबैक कॉलेज, कैलिफ़ोर्निया में विलियम राइली के साथ काम करने लगीं। वह 2002 से 2004 तक लॉस एंजिलिस प्रिंटमेकिंग सोसायटी की अध्यक्ष रहीं और सैडलबैक कॉलेज सहित पालॉस वर्देस आर्ट सेंटर, ऑरेंज कोस्ट और इर्विन आर्ट सेंटर जैसे संस्थानों में प्रिंटमेकिंग पर व्याख्यान और प्रदर्शन कार्यक्रम दे चुकी हैं। वह लगुना बीच आर्ट्स फेस्टिवल के अलावा 2002 में सान पेड्रो, कैलिफ़ोर्निया में आयोजित लैंटर्न्स ऑफ़ द ईस्ट अंतरराष्ट्रीय कला प्रदर्शनी और 2003 में अमेरिका, जापान, कोरिया और यूरोप के चुने हुए प्रिंटमेकरों के साथ समर 2003 सियोल, दक्षिण कोरिया प्रिंटमेकिंग ग्रुप शो में भी अपना काम प्रदर्शित कर चुकी हैं।

उनकी सफलता का रहस्य क्या है? विनीता मुस्करा कर बताती हैं, ''शायद इस कला शैली से मेरा लगाव।'' प्रिंट तैयार करने के लिए वह कोलाज और

ग्राफ़िक्स के मिलेजुले रूप कोलाग्राफ तकनीक का इस्तेमाल करती हैं जो मेहनत और समय, दोनों की मांग करता है। पर्यावरणप्रेमी विनीता अपनी यात्राओं के दौरान बटन, क्लिप और तरह-तरह के कागज इकट्ठे करती हैं। वह जापान से मंगवाई खास गेहूं से बनी अम्लमुक्त लेई नोरी की सहायता से इन्हें कई परतों में जमाकर एक कोलाग्राफ या प्लेट तैयार करती हैं। यह लेई कई सौ साल तक खराब नहीं होती।

फिर गेसोइंग प्रक्रिया से गुजारकर कोलाग्राफ पर स्याही चढ़ाई जाती है। इसके बाद इसे अलग-अलग रंगों के साथ कई बार दो बेलनों वाली खास प्रेस के बीच से गुजारा जाता है- 500 साल पहले रेम्ब्रां भी इसी तरह प्रिंट तैयार करते थे- अलग-अलग रंगों से जिससे कि पारभासी प्रभाव नज़र आए। इस प्रक्रिया से तीन-चार प्लेटों का एक सेट तैयार करने में करीब एक महीना तक लग जाता है। इन प्लेटों की सहायता से विनीता प्रिंटों की एक श्रृंखला तैयार करती हैं जिनमें से कोई भी किसी दूसरे जैसा नहीं होता। अमेरिकी मोटिफों और

*ऊपर : विनीता वूड (बाएं) द्वारा कोलाज व ग्राफ़िक्स के मेल से बनाया कोलाग्राफ।*

शोख गुलाबी गुलनारी, फीरोज़ी और गेरुए जैसे खास भारतीय रंगों के साथ सुनहरे और रूपहले वर्कों के इस्तेमाल ने विनीता की कृतियों को खास पहचान दी है। अब तक वह 100 से अधिक मौलिक प्रिंट बेच चुकी हैं।

उनके पति मार्टेन गर्व से बताते हैं, ''विनीता की कृतियां लगुना आर्ट म्यूज़ियम और होटल बेल एयर जैसी महत्वपूर्ण जगहों पर प्रदर्शित हैं। मुझे लगता है कि एक पत्नी और मां के कर्त्तव्य निबाहते हुए कला के क्षेत्र में इतना आगे बढ़ पाना एक बड़ी उपलब्धि है।''

विनीता का बीस वर्षीय बेटा जेकब सेंट मेरीज़ कॉलेज, कैलिफ़ोर्निया में मनोविज्ञान का छात्र है। वह कहता है, ''अमेरिका में भारतीय मां का बेटा होना अन्य मांओं के बेटे होने से काफी अलग बात है। अगर मैं मां से कहता हूं कि मैं 11.30 बजे तक लौट आऊंगा तो मैं निश्चित रूप से 11.30 बजे लौट आता हूं ... मुझे लगता है मां सख्त हैं लेकिन सही तरीके से।'' विनीता की 22 वर्षीय बेटी लॉरेन ने सैडलबैक कॉलेज में संगीत और कुकिंग की पढ़ाई की है। वह भी भाई के सुर में सुर मिलाती है। ''हमने मां से अनुशासन की आदत सीखी है। हमें गर्व है कि हमारी मां भारतीय हैं।''

***कुमुद मोहन** स्वतंत्र लेखिका और फोटो पत्रकार हैं और नई दिल्ली में रहती हैं।*